RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-09
September-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i09.051

श्रमण परम्परा के धार्मिक क्रियाओं का समीक्षात्मक अध्ययन

रामधनी राम

(JRF, NET) शोध छात्र स्नातकोत्तर प्राकृत एवं जैनशास्त्र विभाग वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

इहलोक तथा परलोक को सुखी बनाने के लिए, पाप–प्रक्षलन तथा पुण्य–प्राप्ति हेतु लोग मुख्यतः तीर्थ, व्रत, दान आदि की धार्मिक क्रियायें सम्पादित करते हैं। तीर्थयात्रा करना एक ऐसा साधन है जो सामान्य जन को स्वार्थमय जीवन के कर्मों से दूर रखने में सहायक होता है। लोगों को उच्चतर एवं दीर्घकालीन नैतिक और आध्यात्मिक जीवन–मूल्यों के विषय में सोचने को मार्ग प्रदान करता है।

आपत्तियों से मुक्ति तथा लौकिक जीवन में शुद्धि–प्राप्ति की आशा में सामान्य जन द्वारा तीर्थ (पवित्र स्थानों) की यात्रा की जाती है।

वैदिक परम्परा में अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काँची, अवन्तिका, द्वारिका को मोक्षदायक तीर्थ माना गया है।[1] अमावस्या, संक्रान्ति, चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण पर गंगा–स्नान को असंख्य तीर्थ का फल माना गया है। महाभारत के वनपर्व में तीर्थयात्रा के पुण्य को अग्निष्टोम जैसे यज्ञ से उत्तम बताया गया है। अनुशासन पर्व में तीर्थयात्रा को पूर्ण पुण्य प्राप्त करने वाला कहा गया है।[2] अग्नि पुराण में कहा गया है कि जिससे भोग–मोक्ष की प्राप्त होती है वह तीर्थ है।[3]

जैन आगम जम्बूद्वीप–प्रज्ञप्ति में मागधतीर्थ, वरदामतीर्थ, प्रभासतीर्थ का उल्लेख है। आवश्यक निर्युक्ति में तीर्थ को महत्त्वपूर्ण कहा गया है।[5] तीर्थंकर के जन्म, केवलज्ञान, तप और निर्वाण कल्याणकों से सम्बन्धित स्थलों को पवित्र तीर्थ माना गया है।[6]

बौद्धों में भी तथागत के जन्मस्थान, ज्ञानप्राप्ति, धर्मचक्र प्रवर्तन और निर्वाण इन चार घटनाओं से सम्बन्धित स्थान को पवित्र मान इनकी यात्रा को महत्त्व प्रदान किया गया है।[7] सुधाभोजन जातक[8] में तीर्थस्थल के रूप में बाहुका, गया, तिम्बरू का उल्लेख है। भूरिदत्त जातक में पाप–प्रक्षालन तीर्थ के रूप में प्रयाग का उल्लेख है। यहाँ का जल पापनाशक के रूप में प्रख्यात था।[9]

धार्मिक क्रिया का दूसरा मुख्य अंग व्रत है। वैदिक एवक श्रमण दोनों परम्पराओं में अनिष्टकारी शक्ति से व्रत किया जाता है। व्रत धार्मिक संकल्प के रूप में ग्राह्य है अर्थात् किसी तिथि, सप्ताह, दिन या मास में एक मानसिक प्रतिज्ञा की जाती है जिसमें व्यक्ति को भोजन–सम्बन्धी या आचरण सम्बन्धी कुछ निषेधों का पालन करना पड़ता है।

वैदिक संहिता में आचरण से सम्बन्धित नैतिक–विधियों के अर्थ में व्रत आया है।[10] पूर्णमासी के उपरान्त आठवें दिन अष्टमी को व्रत तिथि कहा गया है।[11] आपस्तम्ब धर्मसूत्र में उल्लेख है कि अमावस्या की रात्रि में चन्द्र, सूर्य के साथ रहता है इसलिए इसे दर्श भी कहा गया है। अग्निपुराण में व्रत के दस गुणों का वर्णन किया गया है।[12] पुराणों में उल्लेख है कि कामदेव, यक्ष, शिव के लिए क्रमशः त्रयोदश, चतुदर्श, पूर्णिमा के दिन व्रत सम्पादन होता है।[13] एकादशी व्रत की मान्यता सर्वाधिक है और इस सम्बन्ध में प्रचलित है कि एकादशी व्रत से उत्पन्न अग्नि से सहस्रों जीवन में किये गये पापों का इंधन जलकर भस्म हो जाता है। अश्वमेघ एवं वाजपेय जैसे सहस्रों यज्ञ एकादशी व्रत के सोलहवें अंश तक भी नहीं पहुंच सकते। एकादशी स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदायक है। एकादशी की रात्रि से वार्तिक शुक्ल एकादशी तक चातुर्मास्य व्रत की स्थापना की जाती है। इस समय व्रती को शय्या, शयन, मांस, मधु आदि का त्याग करना पड़ता है।

जैन साहित्य में पंचमी अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी को उपवास का दिन बताया गया है। व्रत का पोषधेपवास या पोसहसाल कहा गया है।[15] उपासकाध्ययन में कहा गया है कि व्रत के दिन विशेष पूजा करके व्रत का आरचरण कर धर्म कर्म को बढ़ाना चाहिए। इसके पूर्व के दिनों में रस का त्याग, एकाशन या उपवास, एकान्त–निवास करना चाहिए।[16] लोग अपने आध्यात्मिक विकास के लिए प्रत्येक अष्टमी, चतुर्दशी पूर्णमासी के दिन उपवास करते थे एवं संध्या को पोषण ग्रहण करते थे। मज्जिझमनिकाय,[18] अंगुत्तरनिकाय[19] संयुक्तनिकाय[20] थेरीगाथा[21] से विदित है कि अनिष्टकारी शक्ति एवं प्रभाव से बचने के लिए विभिन्न प्रकार के मनोकामना पूर्ति के लिए सामान्य जन प्रायः चतुर्थी, पंचदशी, अष्टमी तथा नवमी व्रत का पालन करते थे। चातुर्मास व्रत को वर्षावास कहा गया है। वृहत्कल्पभाष्य में वर्षावास का परम प्रमाण चार माह गया है।[22] स्थानांग सूत्र[23] तथा

RRIJM 2015, All Rights Reserved

विनयपिटक[24] में चातुर्मास्य व्रत के रूप में वर्षावास का उल्लेख है।

धार्मिक क्रिया का तीसरा महत्त्वपूर्ण अंग दान है। ऋग्वेद में दान को अति श्रेष्ठ माना यगा है। इसमें नीति है कि दानदाता के पाप को इन्द्र नष्ट कर देते हैं।[25] दानकर्ता के लिए हा गया है कि वह स्वर्ग में उच्च स्थान प्राप्त करता है। अश्व–दान करने वाला सूर्यलोक में निवास करता है। स्वर्ण का दानी देवता का पद प्राप्त करता है। परिधान का दान करने वाले दीर्घ जीवन का लाभ करता है। सप्तम मण्डल में अश्वदान, गायदान, रथदान का उल्लेख है।[27] पंचम मण्डल में रक्तदान का उल्लेख है।[28] चतुर्थ मण्डल में गोदान करने वाले का दान प्रशंसनीय कहा गया है।[29] छान्दोग्य उपनिषद् में आया है कि जनश्रुति पौत्रायण ने स्थान–स्थान पर ऐसी भोजनशालाएँ बनवा रखी थी जहाँ पर सभी दिशाओं से आकर लोग भोजन प्राप्त कर सकते थे।[30] महाभारत के अनुशासन पर्व में भूमिदान, वशिष्ठ–धर्मसूत्र, मनुस्मृति तथा याज्ञवल्क्य स्मृति में विद्यादान, विष्णु धर्मसूत्र में अभयदान को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है।[31]

जैनों के सूत्रकृतांग में अभयदान को श्रेष्ठ कहा गया है।[32] जैन आगम में दान के लिए मुद्यादायी और मुद्याजीवी शब्द का उल्लेख किया गया है। दान वही श्रेष्ठ है जिसमें दाता का कल्याण हो और गृहीता का भी कल्याण हो।[33] आचारांग सूत्र में उल्लेख है कि तीर्थकर दीक्षा लेने के पहले वर्षीदान करते हैं। स्थानांग सूत्र में दान को श्रेष्ठ धर्म कहा गया है।[34] स्थानांग सूत्र तथा आवश्यकचूर्णि में दान के दस प्रकारों का भी उल्लेख है।

आवश्यक सूत्र, उपासकदशांग, सूतकृतांग एवं भगवतीसूत्र में दान के उत्तम प्रकारों का उल्लेख है। इनमें शासन, दान, खादिम, स्वादिम, वस्त्र, पात्र, कम्बल, पादपोछन, पीठफलक, शय्या, संस्तारक, औषध और भेषज्य दान को श्रेष्ठ फलदायी कहा गया है।[36]

बौद्ध साहित्य में भी दान–क्रिया की निरन्तरता जारी हे और दिव्य बल, आयु[37] ब्रह्मलोक की प्राप्ति,[38] सर्वज्ञता की प्राप्ति,[39] देवतत्व की प्राप्ति,[40] पुत्र की प्राप्ति,[41] पुण्य एवं स्वर्ग–प्राप्ति[42] के लिए दान दिये जाने का उल्लेख है। संयुक्त निकाय[43] में दानी द्वारा श्रमणों, ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, गन्ध आदि अनेक वस्तुएँ दान में देने का उल्लेख है। जातकों से विदित होता है कि दानपतियों द्वारा अपने अपने नगर में प्रायः छह–छह दानशालाओं के निर्माण की प्रथा प्रचलित थी।[44] दुहद जातक में सामूहिक दान का उल्लेख है।[45] इस प्रकार हम देखते हैं कि वैदिक और श्रमण परम्परा में अनेक धार्मिक क्रियाएँ समान थी। यदि इन धार्मिक क्रियाओं को वीतरागभाव से किया जाता है तो ये परम्पराय मोक्ष–लाभ में सहायक होती है।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. काणे, पी.वी. – धर्मशास्त्र का इतिहास, तृतीय भाग, पृ. 1371
2. वही, पृ. 1300
3. अग्निपुराण, अध्याय 101, पृ. 235, गीता प्रेम, द्वितीय संस्करण
4. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, 3/57 हिन्दी अनु. मधुकर मुनि
5. आवश्यक निर्युक्ति, पृ. 284
6. वही
7. सांस्कृतयन, राहुल–बुद्धचर्या, पृ. 500
8. जातक, 5, पृ. 471–72
9. जातक, 6, पृ. 234
10. काणे, पी.वी. – धर्मशास्त्र का इतिहास, चतुर्थ भाग, पृ. 8
11. वही, पृ. 26
12. वही, पृ. 28
13. वही, पृ. 42
14. वही
15. उपासकदशांग – सूत्र,अभय देव टीका, 45
16. उपासकाध्ययन, 7/8/19
17. कोठरी, सुभाष – उपासकदशांग और उसका श्रावकाचार एक परिशीचल, पृ. 182
18. मज्झिम निकाय, हिन्दी अनुवाद– राहुल सांकृत्यायन, पृ. 166
19. अंगुत्तर निकाय, भाग एक, हिन्दी अनुवाद – भदन्त आनन्द कौशल्यायन, पृ. 147
20. संयुक्त निकाय, भाग एक, हिन्दी अनु., जगदीश काश्यप, धर्मरचित, पृ. 181

RRIJM 2015, All Rights Reserved

21. थेरीगाथा, हिन्दी अनु. भारत सिंह उपाध्याय, पृ. 13
22. वृहत्कल्पभाष्य 1/6/7/8
23. स्थानांग सूत्र, हिन्दी अनु. मधुकर मुनि, पृ. 282–83
24. विनयपिटक, हिन्दी अनु. राहुल सांकृत्यायन, पृ. 17
25. ऋग्वेद, चतुर्थ मण्डल, सूक्त 20, पृ. 36
26. काणे, पी.वी. – धर्मशास्त्र का इतिहास, हिन्दी, पृ. 447
27. सप्तम मण्डल, सूक्त 18
28. पंचम मण्डल–सूक्त 8
29. चतुर्थ मण्डल सूक्त 1
30. काणे, पी.वी. – धर्मशास्त्र का इतिहास, हिन्दी, पृ. 449
31. वही
32. सूत्रकृतांग, हिन्दी अनुवार, मधुकर मुनि– पृ.314
33. मुनि पुष्कर– जैन धर्म में दान एक समीक्षात्मक अध्ययन, पृ. 314
34. आचारांग सूत्र, हिन्दी अनुवाद मधुकर मुनि, पृ. 371
35. स्थानांग सूत्र, हिन्दी अनुवाद मधुकर मुनि, पृ. 711
36. मुनि पुष्पकर – जैन धर्म में दान एक समीक्षात्म्क अध्ययन, पृ. 362
37. महावग्ग, 644, पृ. 236
38. अरक जातक, 2, पृ. 169
39. विसच्छ जातक, 3, पृ0 292
40. बिलोरकेसिय जातक 4, 264–65
41. महावेस्सन्तर जातक, 6
42. अंगुत्तर निकाय, हिन्दी अनुवाद भदन्त आनन्द कौसल्यायन, भाग– 2, पृ. 277
43.. संयुक्त निकाय, हिन्दी अनुवाद– जगदीश काश्यप, धर्मरक्षित, भाग 1, पृ. 20
44. बिलोरकेसिय जातक, 4, पृ. 264, शंखपाल जातक, 5, पृ. 252
45. दुहद जातक, 2 ,पृ. 262–63

RRIJM 2015, All Rights Reserved